International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493, Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 03-01-2021, Accepted: 23-01-2021, Published: 31-03-2021
Volume 3, Issue 1, 2021, Page No. 18-21

हिंदी कथा साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्शः "नियति" कहानी के विशेष संदर्भ में।

डॉ. जयश्री. ओ.
असिस्टेंट प्रोफसर, यूनिवेर्सिटि कॉलेज, तिरुवनंतपुरम, केरल, भारत

सारांश
भारतीय समाज में जब लिंग की बात की जाती है तो आमतौर पर दो ही लिंग की बात होती है जैसे स्त्रीलिंग और पुल्लिंग। सामाजिक संरचना भी इन दोनों पर अधिष्ठित माना जाता है। लेकिन पौराणिक युग से ही एक अन्य प्रजाति का अस्तित्व हम देख सकते हैं जो न नर होता है न नारी, जिसे वर्तमान समाज थर्ड जेंडर, किन्नर, हिजडा, शिखण्डी जैसे नामों से पुकारा जाता है। स्त्री या पुरुष की श्रेणी में न आनेवाले ये लोग दूसरों केलिए केवल परिहास या मनोरंजन की वस्तु है। समाज के हिस्से होने पर भी पशु से बदत्तर जीवन जीने केलिए अभिशप्त इस बेचारे वर्ग के जीवन की विडम्बनाओं का यथार्थ चित्रण डॉ. लक्ष्मी दीक्षित ने अपनी कहानी 'नियति' के माध्यम से किया है। यह कहानी इस बात पर बल देती है कि अधूरे तन के इस जन्म को किसी भी शक्ति से पूर्ण नही कर सकते लेकिन उसे यह चिंतित करने केलिए बाध्य कर देती है कि परिस्थितियाँ अटल हैं लेकिन अपने भाग्य रचयिता स्वयं आप ही है।

मूल शब्द: प्रजाति, किन्नर, मनबहलाव, अभिशाप, सामाजिक हिस्सा, हाशिया, नियति, विरासत, तकलीफदेह, विडम्बनाएँ, सफर, मंज़िल

प्रस्तावना

मानव ने अपनी सुविधा केलिए समाज को स्त्री और पुरुष जैसे दो हिस्सों में बांटकर रखा । सामाजिक संरचना भी इन दोनों स्तंभों के संयोग या अस्तित्व पर अधिष्ठित माना गया तथा प्रत्येक का उद्देश्य भी निर्घारित किया गया। मानो एक की पूर्ति दूसरे न कर सके। लेकिन पौराणिक युग से ही एक अन्य प्रजाति का अस्तित्व मौजूद है जो न नर होता है न नारी । अर्थात् अलिंगी होता है। इसे परिष्कृत शब्दावली में किन्नर कहा जाता है। यह वर्ग शिखण्डी, खोजा,मौसी, हिजडा जैसै अनेक नामों से जाना जाता है। भारतीय समाज के बहुत से विकृत परम्पराओं के कारण त्रासदापूर्ण जीवन व्यतित करने के विवश अधिक होते हैं, उनमें सर्वाधिक उपेक्षित वर्ग है किन्नर। स्त्री या पुरुष की श्रेणी में न आनेवाले ये लोग दूसरों केलिए केवल परिहास या मज़ा की वस्तु है। समाज में रहते हुए भी समाज से पृथक ऐसी ईकाई के रूप में इनकी पहचान की जाती है जो असलियत के बजाय पूर्वनिर्णय मान्यताओं और गप्पों पर आधारित होती है। माना जाता है कि किन्नरों की दुआ का असर बहुत अधिक होता है। पारंपरिक अनुष्ठानों में आशीर्वाद देने पहुंचनेवाले किन्नर समुदाय के जीवन एवं ज़ेहन दूसरों केलिए केवल मनबहलाव का विषय है।अक्सर समाज उनको घृणा की नज़रों से देखा जाता है। यही नहीं इनकी व्यथा व पीडा पर अपना मनोरंजन करता है।

सदियों से समाज की प्रताडना का शिकार बने किन्नर वर्ग की अभिशप्त त्रासद जीवन को अक्सर साहित्यकारों ने अपने साहित्य का विषय बनाया। उन्हीं के प्रति समाज के संकीर्ण मानसिकता को बदलने के उद्देश्य से वे अपनी रचनाओं के माध्यम से उनसे स्वर मिलाते हैं कि " जन्म तो किसी के बस की बात नहीं पर ठीक से जीने का हक तो सबको है।"1 हिंदी कथा साहित्य में किन्नर के त्रासद जीवन को जितनी गहराई से उतारा गया है उतनी अन्य विधाओं में नहीं हुआ है। हिंदी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत् सन् 2002 में नीरजा माधव द्वारा लिखा गया 'यमदीप' उपन्यास से माना जाता है। इसके बाद महेंद्र भीष्म के 'किन्नर कथा, मैं पायल' , निर्मला भुराडिया के 'गुलाम मंडी', भगवंत अनमोल के 'ज़िन्दगी 50-50', प्रदीप सौरभ के 'तीसरी ताली', चित्रा मुद्गल के 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' जैसे उपन्यासों में किन्नर समस्याओं की पड़ताल की गयी है। इसी प्रकार डॉ.लवलेश दत्त के 'नवाब', कुसुम अंजली के 'ई मुर्दन का गॉव', डॉ. एम. फिरोज़ खान द्वारा संपादित 'थर्ड जेंडरः हिंदी कहानियाँ', शिवप्रसाद सिंह के 'बगाव वृत्ति', 'बिंदा महाराज', सलाम बिन रजाक के 'बीच के लोग' जैसी अनेक हिंदी कहानियों द्वारा किन्नर जीवन व्यथा एवं मानसिक संताप का यथार्थ चित्रण समाज के समकक्ष प्रेक्षित हुआ है। डॉ. रश्मि दीक्षित ने भी अपनी कहानी 'नियति' में इस उपेक्षित एवं हाशियेकृत समाज की समस्याओं, वेदनाओं तथा संघर्ष की जो अकथ कथा हमारे समुख प्रस्तुत किया है वह अनुपम है। उन्होंने विवेच्य कहानी द्वारा स्वयं अभिशप्त जीवन बिताते समय भी दुसरों केलिए दुआ देने तथा दूसरों की खुशी में खुश रहने केलिए नियत किन्नरों की 'नियति' पर प्रकाश डाला है।

'नियति' के प्रमुख पात्र रितु अपने माँ-बाप का इकलौता संतान था। बचपन में उसका नाम रितेश था। बेटा पाकर पूरा परिवार खुश था। सबकी आँखों का तारा, उनके भविष्य का सपना, उसे देख-देख ही खुश होते हैं।जैसे-जैसे वह बडा होता गया उसके हाव-भाव देख सब परेशान होने लगे।लडकियों-सी कोमलता, नाजुकता, पनपने लगी थी। उसमें शारीरिक बनावट तो लडकों -सी पर लडकों सा बर्ताव नहीं था। डाक्टर का यह कथन पूरे परिवार को दुख में डाला- "आपका बच्चा न महिला है न पुरुष,भले ही वह लडके के रूप में पैदा हुआ है।..... इसका कोई इलाज नहीं है। .....उनकी नियति को नहीं बदल सकते"। यह समाचार पूरे समाज में फैलने के डर से माँ ने उसे कमरे में बंद कर दिया। लेकिन किन्नर बस्ती के लोग यह जानकर रितेश को अपने परिवार का सदस्या बना लेता है । वहाँ उसका पुनर्जन्म हुआ। वहाँ की रीति-रिवाज़ों के अनुसार वह रितेश से रितु बन गयी। वहाँ काली माँ उसे माँ जैसी बेहद प्यार देती थी। एक दिन उन्हें बुलावा आया है कि शहर के सेठ के यहाँ पोता हुआ है, उसे दुआ देने केलिए जाना है। सभी किन्नरों के साथ काली माँ रितु को भी अपने साथ लिया। उस घर पहुँचते-पहुँचते रितु पहचान लेती है सेठ का वह घर अपना घर ही है। विवेच्य कहानी के ज़रिए लेखिका ने हिजडा होने के दर्द का मार्मिक वर्णन किया है। हिजडा होना अक्षम्य पीडा और अभिशाप को ढोने का पर्याय सा है।

उन्हें समाज का सहज और स्वीकृत हिस्सा नहीं मानते हैं। जन्म के साथ ही समाज और घर-परिवार से बहिष्कृत हो जाता है।अन्य इंसानों की तरह ही समाज का एक हिस्सा होने पर भी पशुओं से भी बदत्तर और गया गुजरा जीवन जीने केलिए समाज द्वारा ही उन्हें मज़बूर किया जाता है। काली माँ का यह कथन इसका सबूत है-"मुझे समझाया गया कि मैं समाज का हिस्सा नही हूँ, मेरा जन्म बेकार है। लोग मुझपर हँसते थे, ताने मारते थे।"3 यों सामाजिक,साहित्यिक राजनैतिक, धार्मिक जैसे सभी स्तर के विकासात्मक अवसरों की दृष्टि से पूर्णतया बहिष्कृत या हाशिए पर रहे इस वर्ग की संवेदना को समझने की कोशिश में सभ्य समाज कोसों दूरी पर है।

हिजडों का जीवन विडंबनाओं का समुद्र है और संपूर्ण जीवन घुट-घुटकर जीने केलिए अभिशप्त है। जन्म से लेकर मृत्यू तक अपने परिवार एवं समाज से विस्थापित होकर रहने केलिए अभिशप्त यह वर्ग दूसरों केलिए बडी कौतूहल का विषय रहा है। समाज से उसका संबंध इतना है कि जब कहीं

एक संतान का जन्म होने पर या किसी मांगलिक अवसर पर नाच-गाकर दुआ देना ही है। यही उनकी आजीविका है, रोज़ी-रोटी है- "हम अभागों का पूरा जीवन अपनेलिए रोटी और बुढापे की बीमारियों के इन्तज़ाम करने में बर्बाद हो।"4 इसलिए ही अपने वर्ग के किसी की मृत्यू हुई तो वे कदापि दुखी नहीं होते,वे आश्वास करते हैं कि उसकी इस नारकीय ज़िन्दगी से मुक्ति मिली- "हम लोगों में किसी की मौत को मातम के रूप में नहीं मनाते खुश होते हैं कि मरनेवाले को इस नारकीय ज़िंदगी से आज़ादी मिल गई।"5 कैसी विडंबना है!

सामाजिक गतिविधियों से पूर्णतया उपेक्षित इस वर्ग की सबसे बडी विडंबना तो यही है कि सभ्य समाज उसे मानव ही नहीं समझता है। कदम –कदम पर समाज उसके अस्तित्व को रौंदता है, घायल करता है। जन्म से विरासत में मिली व्यंग्य शारीरिक स्थिति के बोज को शाप की तरह अपने नसीब के साथ चिपकाकर वे ताउम्र जीतेजी मरते रहते हैं। जीवनभर तिरस्कार, घृणा, तानों एवं अपमानों को सहते-सहते अपने ही लिंग से नफरत करते-करते जीना जितनी तकलीफदेह होगा, इसका अनुमान भी हम नहीं कर सकते। वे कहते हैं कि-"लोग गरीबों को भोजन कराते हैं,मंदिरों में दान करते हैं पर हमें कोई देना पसंद नहीं करता। हमें व्यावसायिक प्रतिष्ठानों दूकानों आदि में मज़दूरी का कोई भी नहीं मिलता।"5

समतामूलक समाज की आधुनिक अवधारणा में हमेशा यह नारा गूंजता रहता है कि सभी वर्ग और समुदाय के लोगों को समुचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। भूमण्डलीकरण के इस ज़माने में ऐसी धारणा है कि प्रत्येक जीवनधारी को उसकी गरिमा के अनुरूप जीने का हक प्राप्त है। लेकिन इस हाशियेकृत वर्ग की दयनीय ज़िदगी पर प्रकाश डालें तो हमें मालूम पडता है कि यह केवल अवधारणा मात्र है। सामाजिक असंवेदना की झलक सबकहीं मिलती है। इसलिए ही माँ-बाप भी काली जैसे अपने किन्नर बच्चे को मेले में जानबूझकर छोडते हैं या छोडने में न हिचकते हैं। किन्नर होना स्वयं उस बच्चे का या उस माँ-बाप का कारण नहीं है। इसलिए ही वे पूछते हैं- "लोग कहते हैं कि ईश्वर ने संसांर बनाया, औरत-मर्द बनाए। फिर हमारी कल्पना कैसे कर ली, उससे हमारी बनावट में कहाँ गलती हो गयी। क्यों भगवान ने हमें अक्षम बनाया। न हम औरत है न पुरुष, हम क्या है माँ तुम बताओ, तुमने कभी कल्पना की थी कि तुम एक किन्नर को जन्म दोगी। इसमें न तुम्हारी गलती है,न मेरी ,इसमें भगवान की गलती है जो हमें बनाया।"6 समाज द्वारा हमेशा से उपेक्षा के शिकार बने इन बेचारों के भीतर सामाजिकता की भावना उच्चतम स्तर की होती है। दबी इच्चाओं एवं आकांक्षाओं से पिरोये इस वर्ग के मन तो मानवतावादी धर्म एवं आस्था से भरपूर है। इसलिए जबकहीं एक किन्नर बच्चे का जन्म हुए तो वे उसे दूसरों की पीडा के शिकार नहीं बना देते। अपने माँ-बाप के सहमति के बिना ही अपनी बस्ती का सदस्या बनाते हैं- "अब तेरा बेटा हमारा है। इसे भूल जाना। हमारा कोई रिश्तेदार नहीं,कोई सगा-संबंधी नहीं। हम भगवान के बच्चे हैं, और उन्हीं के सहारे रहते हैं।"7 वस्तुत:अलिंगियों की यही नियति है। बाद में वे अपने परिवार के साथ जीना- चाहते हैं तो भी संभव नहीं-"सोच मत री,अब तेरा यहाँ कोई नहीं है। तेरे सारी रिश्ते उसी दिन खत्म हो गए, जिस दिन तू हमारे साथ आयी थी।" 8 इसी प्रकार लेखिका ने "नियति" शब्द का अर्थ दो प्रकार किया है। एक ओर तो किन्नर को किन्नर बस्ती में जीना पडता है तो दूसरी ओर अपने को जन्म दिए घर के दूसरे बच्चे केलिए दुआ देने केलिए विवश किन्नर की नियति,अपने अधूरे जीवन में भी दूसरों की खुशी में खुश रहने की यह नियति वास्तव में वेदनाजनक है। इसप्रकार लेखिका ने 'नियति'कहानी के माध्यम से किन्नरों की जीवन शैली,उनके प्रति समाज की मनोवृत्ति एवं उससे उत्पन्न विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण खींचा है। साथ ही साथ इस पर बल देती है कि शस्त्र की शक्ति,धन की शक्ति,विद्या की शक्ति कोई शक्ति जन्म को परिवर्तित नहीं कर सकती, लेकिन नियति पर विजय हासिल कर सकते हैं। किन्नरों का यह पहचान इसका द्योतक ही है- "हमारा जीवन व्यर्थ नहीं है।बस हमें खुश रहना सीखना होगा। अपने जीवन में खुशियों को लाना होगा।"9 इसीप्रकार डॉ रश्मि दीक्षितजी अपनी

कहानी 'नियति' के माध्यम से किन्नर को अपनी नियति को परास्त करके नए सफर पर,नयी मंज़िल की ओर आगे बढने का आत्मबल प्रदान करती है।

आधार ग्रंथ: हम भी इंसान हैं- सं.डॉ.एम.फिरोज़ खान -नियति –डॉ.रश्मि दीक्षित

संदर्भ ग्रंथ

1. थर्ड जेंडर हिन्दी कहानियाँ- कुसुम अंसल,ई मुर्दन का गाँव-पृ.सं.56
2. हम भी इंसान हैं - सं. डॉ.एम. फ़ीरोज़ खान- नियति- डॉ.रश्मि दीक्षित, पृ.सं.87
3. वही.पृ.सं. 89
4. वही पृ.सं.90
5. वही पृ.सं 89
6. वही पृ.सं 92-93
7. वही पृ.सं 91
8. वही पृ.सं 91
9. वही पृ.सं 90